Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:3.021 website: www.researchguru.net
Volume-11,Issue-4,March-2018

हिन्दी में दलित साहित्य

प्रो.बाबुभाई एन. चौधरी

हिन्दी विभागाध्यक्ष,

व.ना.स.बैंक लि. आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज,वड़नगर |

दलित साहित्य वर्ण व्यवस्था, ज्ञाति - व्यवस्था का खंडन करके मानवता वाद का समर्थन करता है साथ ही सामाजिक ढाँचे में परिवर्तन लाने की माँग भी करता है | दलित साहित्य वर्षो से बने अंधविश्वासों को तोड़कर आज आदमी को सुख - दुःख से जुड़ने की प्रेरण देता है | जैसी स्थिति दलितों की रही उसी तरह की स्थिति हमारे समाज में स्त्रियों की है यह साहित्य स्त्रियों को पुरुष के समान अधिकार देने की भी बात करता है | दलित साहित्य श्रमिक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है और उनके महत्व को स्पष्ट करते हुए उनमें वेदना का संचार करता है | इसलिए यह साहित्य कुछ लोगों का साहित्य न होकर जन-जन का साहित्य बन जाता है |

दलित साहित्य के उभार और उसके पीछे व्यापक जनाधार को देखकर अनेक व्यक्ति विपक्ष में खड़े हो रहे हैं | अनेक विद्वानों को 'दलित' शब्द से ही आपति है | वे साहित्य के साथ 'दलित' विशेषण जोड़ने के पक्ष में नहीं हैं | उनका मानना है " साहित्य कभी दलित नहीं होता | वह तो पतित पावन है | आत्मा का भूल जड़बरी दर्शन के चक्कर में पड़कर कुछ स्वजन साहित्य को दलित विशेषण देकर क्या हित कर रहे है, यह में अभी तक नहीं जान सका | पृथकता का भाग तो उजागर है ही उनतक भी उनका करिश्मा दिखने लगा है |"

दलित शब्द की व्याख्या सापेक्ष है क्योंकि इस शब्द को लेकर बड़ा फिकर है कि वास्तव में दलित किसे आज जाए ? अनेक विद्वानों का आता है कि दलित का अर्थ है - शोषित , पीड़ित, कुचला ओर सताया हुआ | अंतः दलित के अंतर्गत उन

सबको सम्मिलित करना चाहिए जो आर्थिक रूप से बिछड़े है शोषित - पीड़ित है | यह दलित की व्यापक अवधारणा है किन्तु जिस परिपेक्ष्य में आज दलित आन्दोलन ओर दलित साहित्य सामने आया है, उस परिपेक्ष्य में यह 'दलित' की सही अवधारणा नहीं है| इसमें अतिव्याप्ति दोष है | दलित के अंतर्गत वे जातियाँ है | जिन्हें सामाजिक इतिहास की दीर्घ परम्परा में अस्पृश्य समजा गया है , जिसके लिए अलग बस्ती , अलग धर और अलग मरघंट का विधान है | वह समाज का सीमान्त व्यक्ति है | उन्हें सामाजिक, आर्थिक, राजनितिक शारीरिक और मानसिक सभी द्रष्टियाँ से शोषण का शिकार बनाया गया है और रेखांकित करने योग्य सबसे हैरतअंगेज बात तो यह है कि उन्हें अछूत माना गया, सवर्ण उसकी छाया से कतराते रहे किन्तु उनके श्रम और उनकी अशिक्षा का नाजायज फायदा उठाते रहे | आज राजनितिक और आर्थिक लाभ लेने के लिए सवर्ण भी दलित और हरिजन कहलाना चाहते है ये तथा कथित सवर्ण भले ही आर्थिक रूप से शोषित हो , किन्तु वे अछूत नहीं हैं | उन्हें सामाजिक मान्यता प्राप्त रही है | उनकी पवित्रता और सामाजिक ऊँचाई पर कोई सन्देह नही रहा |अंत:उन्हें भी 'दलित' के अन्तर्गत रखा जाय तो उन जातियों को कौन सा नाम दिया जाये जो सामाजिक वेद्री पर उपेक्षित है जो सामाजिक हक़ की लड़ाई लड़ रहे है | दलितों के उपर अस्पृश्ता का धब्बा लगा हुआ है और उससे मुक्ति के लिए 'हरिजन' या अछुत की जगह अपने को 'दलित' कहलाना पसंद करते है, किंतु सवर्ण आर्थिक-राजनितिक लाभ प्राप्ति के लिए अपने को दलित- श्रेणी में रखना चाहते है और उनकी व्याख्या का आधार आर्थिक है | अत: 'दलित' शब्द परम्परागत, अछूत अस्पृश्य या "हरिजन" जेसे शब्दों का परिष्कृत और परमार्जित रूप और साहित्यक संस्करण है |

दलित शब्द का अर्थ भगवद गो मंडल शब्दकोष में इस प्रकार दिया गया है...... "दलित-चूर्णित, कुचला हुआ, टुटा हुआ, तोडा हुआ, फाड़ा हुआ, कचरा हुआ, नष्ट किया गया, पीड़ित, पिसा हुआ, दबाया हुआ, कुचला गया, भिखारी, गरीब, विकसित, खिला हुआ, हल्का, अधम | "

दलित शब्द का अर्थ मानक हिन्दीकोष

१. भगवद गो मंडल शब्दकोश -पृ.४३३३ त्रीवेन प्रकाशन राजकोट में इस प्रकार दिया गया है ....

"दलित" (भूत कृदंत) (संदर्भ+ वत)

(अ) जिसका अर्थ दलन हुआ है |

(ब) जो कुचला , दला, मसला या रौंदा गया है |

(स) टुकड़े - टुकडे किया हुआ | चूर्णित |

(द) जो दबाया गया हो | जिसे पन पने या बढ़ने न दिया गया हो | हीन अवस्था में पड़ा हुआ |

(ड) ध्वस्त या नष्ट किया हुआ |"

हिन्दी में दलित साहित्य आन्दोलन के एक समर्थ रचनाकार के रूप में ओम प्रकश वाल्मीकि का नाम लिया जाता रहा है | उन्होंने दलितों की वेदना पीड़ा आदि को भलीभाँति भोगा है | जैसा कि भोगा हुआ यथार्थ अधिक सच्चा माना जाता है , तो वैसे ही उनके द्वारा दी गई दलित साहित्य की परिभाषा भी अधिक उपयुक्त है | उन्हीं के शब्दों में .... " दलित शब्द दबाये गये, शोषित , पीड़ित , प्रताड़ित के अर्थो के साथ जब साहित्य में जुड़ता है तो विरोध और नकार की ओर संकेत करता है | वह नकार या विरोध चाहे व्यवस्था का हो , सामाजिक विसंगतियों या धार्मिक रुढियों , आर्थिक विषमताओं का हो या भाषा , प्रान्त के अलगाव का हो या साहित्यिक परंपराओं, मापदन्डों या सोंन्दर्य शास्त्रों का हो , दलित साहित्य नकार का साहित्य है जो संघर्षो से उपजा है | जिसमें समता , स्वतंत्रता ओर बंधुता का भाव है |और वर्ण व्यवस्था से उपजे जाति भेद का विरोध है | " इसलिए उनका यह मानना है की ...." दलित की व्यथा , दुःख , पीड़ा , शोषण का विवरण देना या बखान करना ही दलित चेतना नहीं है या दलित पीड़ा का भावुक ओर अश्रु- विगलित वर्णन जो मौलिक चेतना से विहीन हो |चेतना का सीधा सबंध द्रष्टि से होता है | जो दलितों की सांस्कृतिक , ऐतिहासिक , सामाजिक भूमिका की छवि से तिलस्म को तोड़ता है , वह है.......

(१) मानक हिन्दी कोश तीसरा खंड - पृ - ३५ संपादक - रामचंद शर्मा , हिन्दी साहित्यिक संमेलन प्रयाग | दलित चेतना | वह दलित मानवीय अधिकारों से वंचित सामाजिक तौर पर जिसे नाकारा गया हो|"
दलित साहित्य अर्थात दलितों का साहित्य , दलितों की समस्याओं , उनकी वेदना ,

पीड़ा व्यथा - कथा को कहने वाला साहित्य दलित साहित्य जो अछूत है, जिन्हें समाज से बहिष्कृत कर दिया गया है , जिनसे काम करवाना तो सब कोई चाहता है किन्तु उनके दुख दर्द की ओर देखना भी पाप समझा जाता है | जिनका आज तक शोषण होता आ रहा है, उस शोषण का साहित्य दलित साहित्य है | मायाप्रकाश पन्डेम के शब्दों में .... " जो साहित्य दलित, शोषित, पीड़ित, वंचित आदि समुदाय के लोगों पर गुजारे गये या गुजारे जा रहे जुल्मों का न सिर्फ पर्दाफाश करे अपितु उसका विरोध एवं प्रतिशोध लेने की भावना लोगों में जाग्रत करने हेतु जेहाद छेड़े और वर्षो पुराणी धर्मान्धता जीर्ण - शीर्ण आदर्शो एवं मान्यताओं को तोड़कर नवीन आदर्श एवं विचारों को जन्म देकर विश्वबंधुत्व की भावना को जन्म दे वही दलित साहित्य है |

(१) दलित साहित्य और सामाजिक न्याय - डॉ. पुरषोत्तम सत्यप्रेमी पृ. ८४

(२) हिन्दी में दलित साहित्य - डॉ. मायाप्रकाश पान्डेय" हिमायती "पाक्षिक पत्रिका, सं डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर दिसम्बर १९९६ , भारतीय दलित साहित्य अकादमी, दिल्ली पृ. २

भारत में वर्णव्यवस्था के द्वारा पुरोहित वर्ग ने खुद धर्म सम्मत विधि से सर्वोपरि सिद्ध करते हुए दलितों को समाज में सबसे नीचे स्थान दिया | उतर वैदिक काल में राजा को ईश्वर का अंश बताया गया | वह वर्णव्यवस्थ की सुरक्षा करता था | कुलीन वर्गों के लिए विशेषाधिकार तथा निम्न वर्गों के लिए प्रतिबन्ध कायम रखता था इस तरह दलितों के शोषण में राज्यसता ओर दोनों ने मिलकर जिम्मेदारी निभाई | प्राचीन पालिग्रन्थो में पाँच हीन जातियों चांडाल , निषाद , वेण, रथकार ओर पुक्कस का वर्णन किया गया है उन्हें निचकुल और हीन जाति का बताया गया | ' दोम्ब या डोम , किरात तथा शबर का उल्लेख बाद में हुआ है | निषादों के सम्बन्ध में कहा गया है कि वे वेण रजा के शरीर से उत्पन्न हुए | वेण के बारे में मान्यता है कि उन्होंने ब्राह्मणों पर बहुत अत्याचार किया | इससे लगता है कि उन्होंने ब्राह्मणवाद का प्रबल विरोध किया था | आपस्तम्ब धर्म सूत्र में अंत्यज का भी जिक्र है एसा लगता है कि इस वक्त तक अधिकांश आदिम जातियों को अछूत घोषित किया जा चुका था |

वैदिक तथा ब्राह्मण धर्म के विरोध में खड़े हुए धार्मिक सुधार आन्दोलनों ने दलितों के प्रति नरमरुख अपनाया | बौद्ध धर्म में प्रवेश के लिए चारों वर्ण के लोगो तथा अत्यन्त हीनों हेतु दरबाजा खुला हुआ था |

वास्तव में बौद्धकाल में लौह उपकरणों को बड़े पैमाने पर उपयोग होने से बड़े भू - भाग में खेती शुरू हुई | इसके लिए दासों और कर्म- करों के श्रम की जरूरत हुई | भाड़े के मजदूरों के रूप में कर्मकर शब्द का बौद्धकाल में ही इस्तेमाल शुरू हुआ |

स्पष्ट है कि बौद्ध धर्म ने हीन जाति के लोगो को जो सम्मान दिया | इससे विपुल संख्या में हीन जातियों के लोगो ने बौद्धधर्म को स्वीकार किया | उतर भारत में चट गाँव से लेकर पेशावर तक शायद ही ऐसा , कोई हीन परिवार बचा जिसने बौद्ध धर्म को अंगीकार न किया हो | कालान्तर में इसके बड़े कष्टकर परिणाम भी इन्हें भुगतने पड़े | जब ब्राह्मण धर्म की प्रभुता आई बौद्धों पर बदला लेने की कर्यवाही बड़े कठोर ढंग से की गई | इसके कल स्वरूप उत्तर वैदिक कम में घोषित हीन तथा नीची जाति के लोगों को फिर से जंगलो में आश्रय लेना पड़ा | राज्य की सेनाओं ने हर जगह उनका पीछा किया और खेतों में बिखरे अनाजों तक पर रोक लगा दी गई | इससे मजबूर होकर उन्हें सियार कुन्ता चूहा बिल्ली आदि को खाकर उदर पूर्ति करनी पड़ी | फिर भी जंगलो में अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षा थी | आबादी की वृद्धि के साथ जंगल कटते गए , सुरक्षा में कमी आती गई | जब मुगलों की सेनाएँ गंगा सिन्धु के मैदान में अपना आधिपत्य स्थापित करने के लिए फैली तो वे जंगलो को रोंदते हुए आगे बढ़ी और सामाजिक तथा सामारिक दोनों रूपों में पीडित इन हीन जातियों के कष्ट की सीमा न रही |

दलित साहित्य पुरे भारत वर्ष में आज जोरों से लिखा जा रहा है | दलित साहित्यकार और गैर दलित साहित्यकार आज दलित साहित्य पर अपनी लेखनी चला रहे है | प्रमचंद , निरला , धमिल आदि हिन्दी साहित्य के प्रखर ज्ञाता ओंने भी कहीं न कहीं दलितों को न्याय देने की चेष्टा की है और अपने साहित्य में स्थान दिया है |

मराठी में दलित लेखन जितना प्रभावशाली और परिणम में असरदार रहा, उतना किसी अन्य भाषा में नहीं | आम्बेडकर ,ज्योतिबा फूले , दया पवार (बलूत) बाबूराव बागुल (जब मैने जाति छिपाई थी) , लक्ष्मण माने , लक्ष्मण गायकवाड ,शरण कुमार लिम्बाले (अक्कमाशी , बरमाशी) शंकर राव खरात , माधव कोड

विल्कर ,प्र . ई सोन कांब - ले ,रमाकान्त माधव तथा मलिलाओं में बेबी कांबले जीवन हमारा उपन्यास) शान्ता कांबले , लता जाधव आदि - ने आत्मचरितात्मक रचनाओं द्वारा दलित जीवन के अछूते पहलू को संवेदनात्मक अभिव्यक्ति दी है | मराठी कवियित्रियों में ज्योति लांजेकर , अरुधती झा , लता जाधव , धन देवी , कला मरमट , मीरा किशोर , प्रभा बिसे उषा किरन डी .आत्राम , नाटा परमार , सुनीता महेन्द्र , आदि दलित चेतना से जुड़े है तुषार भाग्यवंत , पांडुरंग जाधव भी दलित चेतना से जुड़े रचनाकार है |

गुजराती में भी दलित लेसन अधिक सक्रीय है जोसेफ मेकवान का 'आगडियात ' बहुत चर्चित उपन्यास है | दलपत चोहान , जी मुठठी मुक्की , चढियो, अस्पृश्य , मूक आदि में दलित संवेदना चित्रित है | प्रवीण गढ़वी (बें ओनेट - कविता संग्रह) साहिल परमार (वयवस्था - पचीसी कविता संग्रह) हरीश मंगलम (तिरड उपन्यास , मोहन परमार (नेणियु उपन्यास , नकलंक - कहानी) बालकृष्ण आनंद , शंकर पेन्टर मनीष परमार आदि रचनाकारों ने दलित चेतना को संवेदनात्मक अभिव्यक्ति दी है | ओडिया में फकीर मोहन सेनापति , गोपीनाथ मोहंती शांतनु आचार्य , भगवती चरण पाणी७१ही तथा मनोजदास के कथा साहित्य में दलित चेतना की अभिव्यक्ति हुई है | तेलगु में तल्ल प्रागद , सूर्य नारायण राव (इलवाती - १९१३) वेंकट पर्वतेश्वर (मातृ मन्दिरम १९१९) उन्नव लक्ष्मीनारायण (माला पल्ली - १९२२) तथा नक्का , चिन्वेन्कॅया , कुसुमा धर्माज्न , जलरंगा ,नुटक्की अब्राहम तथा मुरम जोधुवा की काव्य रचनाओं में दलित चेतना के तत्व मोंजूद है | हिन्दी में ओमप्रकाश वाल्मीकि , (झुढ़न) , मोहनदास नैमिशराय - (अपने अपने पिंजरे) , मनमोहक पाठक (गगंधरा धहरानी उपन्यास) प्रमकुमार मणि , सुरेश काटक , दयानंद बहोरी (सुरंग - कहानी संग्रह) सूरजपाल चौहान संतप्त , तिरस्कृत) सुशीला टॉंका भोरे जयप्रकाश कदॅम , रमणीय गुप्ता , कॅंवल भारती , कुसुम मेघवाल छप्पर उपन्यास(हिन्दी उपन्यासों में दलित वर्ग) आदि रचनाकार दलित लेखन को गति और दिशा दे रह है | आज दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र भी विकसित हो रहा है | विचारों में मत- भेद हो सकता है |संस्कारो में अलगाव दिखायी पड़ सकता है, अनुभवों में दूरियों हो सकती है लेकिन एक बात रेखांकित करने योग्य है कि जो बात कही जाये वह अनुभव सिद्ध हो , उसमें मनुष्यता का गहरा जुडाव हो और उसे सलीके से रचा गया हो | वस्तु और शिल्प का सुन्दर अद्वेत हर प्रकार की रचना के लिए जरुरी है | दलित लेखकों

में कुछ ऐसे नाम उभर रहे है जो स्तरीय है और जिन्हें एक व्यल्क परिपेक्ष्य में एक अच्छे रचनाकार की प्रतिष्ठा दी जा सकती है | इस प्रकार हिन्दी में दलित साहित्य अपनी विकासात्मक सीधी पर चठ रहा है | काफी हद तक इसका प्रचार - प्रसार हो रहा है नये नये रचनाकार सामने आये ये दलित साहित्य की यह सबसे बड़ी माँग है जितना ही इसका साहित्य समृद्ध होगा समृधता में बढ़तरी होगी , समस्याओं का निराकरण होगा जिससे दलित साहित्य की उपयोगिता का समर्थाकता सिद्ध होगी और दलितों का उद्दार निश्चित होगा |